The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 4 | April 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

नहला पुरास्थल से प्राप्त यौधेय गणराज्य के मुद्रांको का विष्लेशणात्मक अध्ययन

डा0 दिलीप कुमार कुशवाहा
एसोसिएट प्रोफेसर, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
गुरुकुल कांगड़ी समविश्वविद्यालय हरिद्वार, उतराखण्ड

डा0 अमित कुमार
सहायक प्रोफेसर, (इतिहास), गुरु जम्भेश्वर विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 12-04-2025

Published: 10-05-2025

Keywords:
गणराज्य ,पुरास्थल, मुद्राएं, ब्राह्मी लिपि , पुरातत्त्व , ऐतिहासिक

ABSTRACT

भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीन सभ्यताओं में यौधेय गणराज्य एक विशेष स्थान रखता है। यौधेय गण एक सैनिक गणराज्य था, जिसकी प्रमुखता विशेष रूप से उसकी स्वर्ण एवं ताम्र मुद्राओं के माध्यम से प्रकट होती है। इन मुद्राओं में अंकित प्रतीक, देवी-देवताओं के चित्रण, तथा संस्कृत व ब्राह्मी लिपि में लेख – तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक जीवन के साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। नहला, हरियाणा के हिसार जिले में स्थित एक अपेक्षाकृत कम चर्चित लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण पुरास्थल है, जहाँ से यौधेय गणराज्य की अनेक मुद्राएं प्राप्त हुई हैं। इस शोध का उद्देश्य नहला से प्राप्त मुद्रांकों का बहुआयामी विश्लेषण करना है, जिससे यह जाना जा सके कि इन मुद्राओं के माध्यम से यौधेय गणराज्य की राजनीतिक संरचना, धार्मिक विश्वास, सांस्कृतिक मूल्यों एवं आर्थिक गतिविधियों का पुनर्निर्माण कैसे संभव है। साथ ही, यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि कैसे नहला जैसे क्षेत्रीय पुरास्थल राष्ट्रीय इतिहास को एक नया दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15382343

भूमिका

यौधेयों की उत्पत्ति के सबंध में दो मत प्रचलित है। पहले मत के अनुसार पाण्डव राजा युधिष्ठर के पुत्र यौधेय से इनकी उत्पति हुई तथा दुसरे मत के अनुसार ठग पुत्र यौधेय से यौधेयों की उत्पत्ति मानी जाती है।[1]पाण्डु पुत्र महाराजा युधिष्ठिर के एक पुत्र का नाम यौधेय था।[2] यह पुत्र युधिष्ठिर की रानी देविका जो गोवासन शैव्य की पुत्री थी से उत्पन्न हुआ था।[3] परंतु कुछ विद्वानों का मानना है यौधेय शब्द की उत्पत्ति यौद्धा से हुई है जिसका अर्थ वीर या जड़ाकू जाति से है।[4] पाणिनी की अष्टाध्यायी में इन्हें आयुधजीवि संघ कहा है।[5] अर्थात् शस्त्रों का

निर्वाह करने वाले लोग। शक शासक रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से जानकारी मिलती है कि उस समय यौधेयों कीगणना प्रमुख वीर क्षत्रियों में की जाती थी। दूत साहित्यिक व अभिलेखीय प्रमाणों के आधार पर हम कह सकते हैं कि यौधेय लोग लड़ाकू थे।[6]यौधेय वीर ओर सच्चे क्षत्रिय थे यौधेय के विचारों में जय कूट-कूट कर भरा हुआ था। उन्होंने जय मन्त्र को धारण किया हुआ था। ऐसे ही जयमन्त्र वाला मुद्रांक कनिंघम को सुनेत (लुधियाना) से प्राप्त हुआ था। जिस पर 'यौधेयानाम् जयमन्त्रधारणाम्' अंकित है। जो इस समय ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन में है।[7] इसी प्रकार के लेख वाला मुद्रांक नौरंगाबाद बामला से प्राप्त हुआ है।

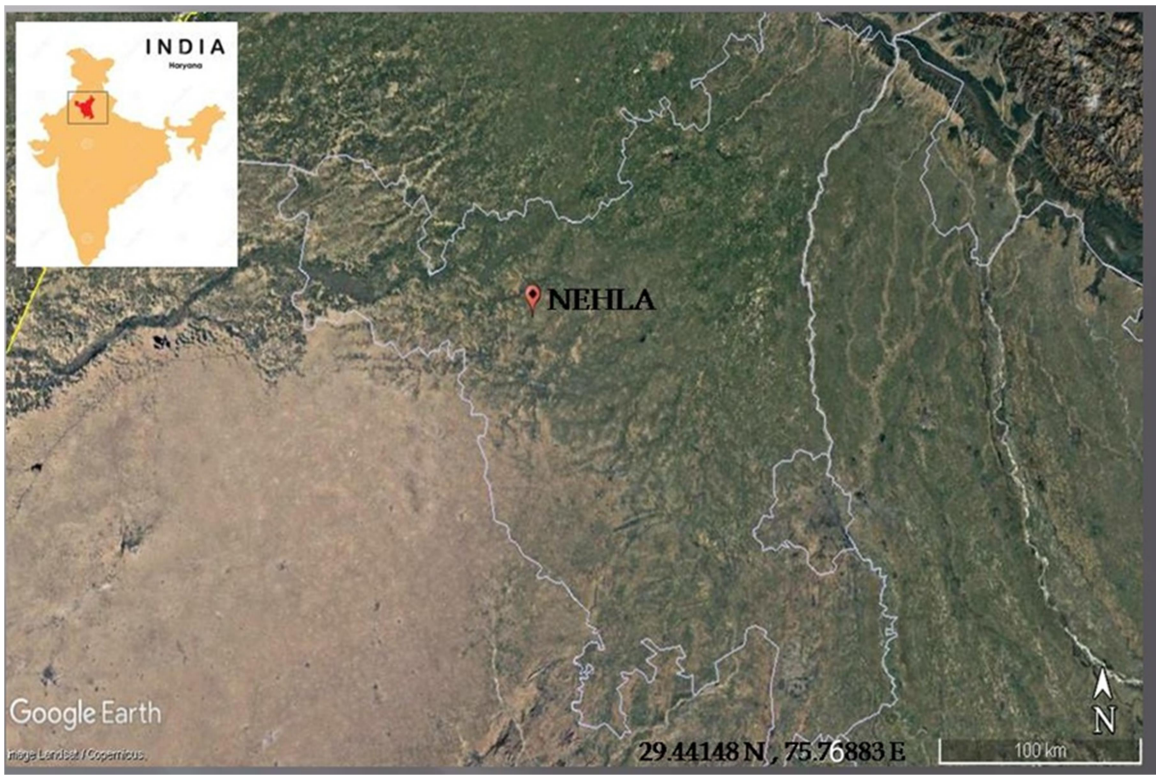

चित्र सं01 नहला पुरास्थल

यौधेयों की वीरता की प्रशंसा गुजरात का महाक्षत्रप रुद्रदामन भी करता है। वह गुजरात में गिरनार पर्वत पर लिखे लेख में वीर कहता है और उनको हराने में अपने आप पर गर्व करता है। अपने लेख में वह कहता है कि उसने यौधेयों का उखाड़ कर दिया। किन्तु उसमें पूर्णतः सच्चाई प्रतीत नहीं होती। रुद्रदामन यदि यौधेयों का पूर्णतः विनाश कर देता तो यह लेख जुनागढ़ (काठियावाड़) में अपने राज्य में ही क्यों खुदवाता?[8] उसका यह लेख यौधेयों के प्रदेश में होना चाहिये था, न तो उसका कोई लेख यौधेयों के प्रदेश में मिलता है और न ही कोई सिक्का। यह हो सकता है कि रुद्रदामन ने यौधेयों की किसी सैनिक टुकड़ी को हरा दिया हो और उस विजय को जूनागढ़ अभिलेख में बढ़ा-चढ़ाकर लिखवा दिया। श्री वासुदेव उपाध्याय लिखते हैं कि ईसवीं सन् की दूसरी सदी में यौधेय जाति उन्नति के शिखर पर पहुंच गई थी। यदि रुद्रदामन ने यौधेयों को सम्पूर्ण नष्ट कर दिया होता तो उनका अस्तित्तव ही कैसे बना रहता।[9] इसी लेख से पता चलता है कि दूसरी सदी ईसवी में यौधेयों का राज्य सुदूर पश्चिमी राजस्थान तक फैल गया था, रामप्रकाश ओझा लिखते हैं कि यौधेयों का अस्तित्त्व मौर्यात्तर शासन क्षत्रप कुषाण काल में ज्यों का त्यों बना रहा। ईसवीं सन् की दूसरी सदी में यौधेय जाति उन्नति के शिखर पर पहुंच गई थी।[10] अनन्त सदाशिव अलतेकर का मत है-सिक्कों के आधार पर स्पष्टतः सिद्ध होता है कि यौधेयों ने कुषाण शक्ति को समाप्त कर उनसे अपने देश को स्वतन्त्र कर लिया। कनिष्क तृतीय के सिक्के सतलुज नदी के पूर्व में नहीं मिलते। उनके

उत्तराधिकारी वासुदेव द्वितीय तथा पश्चात के कुषाण राजाओं के सिक्कें यौधेय प्रदेश में कहीं नहीं मिलते, क्योंकि उनका शासन यौधेयों ने समाप्त कर दिया था।[11] इसके पक्ष में निम्नलिखित बातें कही जाती हैः

1. अन्तिम कुषाण नरेश कनिष्क तृतीय तथा वासुदेव द्वितीय की मुद्राएं सतलुज और यमुना के बीच में नहीं मिलती, परन्तु इसी प्रदेश में यौधेयों की मुद्राएं मिलती हैं।

2. इन मुद्राओं पर यौधेय गणस्यजय लिखा मिलता है।

3. कुछ यौधेय मुद्राओं पर द्वि और त्रि शब्द भी मिलते हैं, इनसे अल्तेकर ने अनुमान किया है कि यौधेयों ने कुषाणों के विरूद्ध एक संघ बनाया था, जिसमें कुणिन्द, अर्जुनायन आदि पड़ोसी जातियों को सम्मिलित किया।[12]

जो भी हो इतिहास में जब से यौधेय गण का अस्तित्व देखते हैं, तभी से ये स्वभाव से वीर और सच्चे क्षत्रिय हैं। जब नकुल पश्चिम दिग्विजय के लिए निकलता है तो बड़े-बड़े योद्धा श्री कृष्ण, बलराम, मद्र देश का राजा वीरशल्य आदि तो नकूल से बिना युद्ध किए स्वागत करके कर प्रदान कर देते हैं, किन्तु यौधेयों के साथ भयंकर युद्ध होता है। महाभारत में इसकी चर्चा विस्तार से की है।[13]इसलिए इन्हें यौधेय कहा गया।

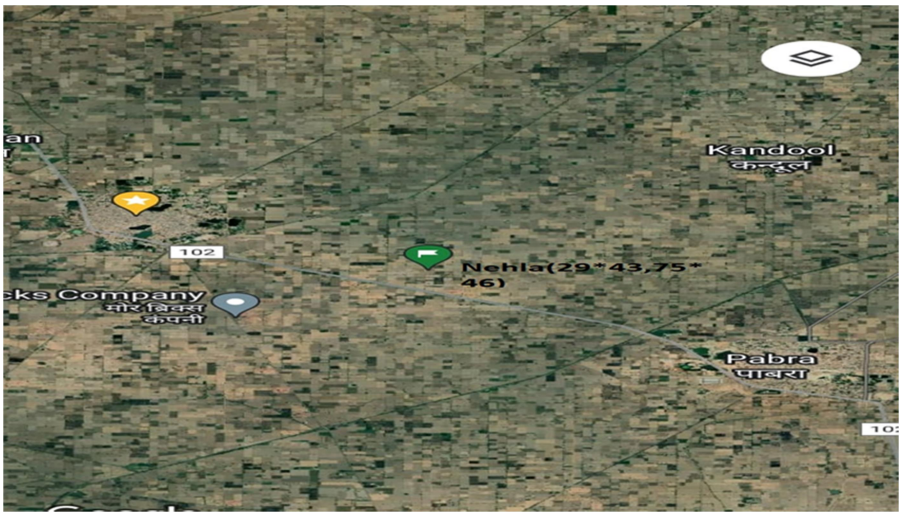

चित्र सं0 2 सैटेलाइट छायाचित्र (नहला पुरास्थल)

नहला (29^{0}43 उतरी अक्षांश व 75^{0}76 दक्षिणी अक्षांश) जो हिसार जिले के अंतर्गत आता था परंतु अब फतेहाबाद जिले की भूना तहसिल हरियाणा राज्य में आता है नहला गांव में नहला से पाबड़ा मार्ग पर सड़क के पास मिट्टी का टिला था जिसका आकार 15 फुट ऊंचा तथा 4 हैक्टेयर चौड़ाई में फैला हुआ था वहां से हमें यौधेय गणराज्य के सिक्के बनाने के सांचे प्राप्त हुए है। ये सांचे पक्की मिट्टी से बने है। इस पुरास्थलसे प्राप्त मिट्टी के सांचे सर्वप्रथम प्राप्त हुए है। जिनका इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। नहला गांव दिल्ली से 201 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है दिल्ली से यहां रेल व बस दोनों द्वारा पहुंच सकते हैं। रेल से आने पर नजदीकी रेलवे स्टेशन बरवाला है बरवाला से बस द्वारा नहला (29^{0}43 उतरी अक्षांश व 75^{0}76 दक्षिणी अक्षांश) पहुंच सकते हैं। बस द्वारा नई दिल्ली से हिसार और हिसार से नहला गांव पहुंचा जा सकता हैं।

राज्य विस्तार

साहित्यिक साक्ष्यों से हमें यौधेयों के ई. पूर्व पांचवी सदी से लेकर बारहवीं सदी तक के प्रमाण मिलते हैं। परन्तु इतने दीर्घकाल तक इनका स्वतंत्र शासन कदापि नहीं रहा। मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद इन्होंने स्वतंत्र शासन किया। यौधेयजनपद की सीमाएं समय-समय पर घटती रही हैं। पांचवी सदी ईसवी पूर्व में जबकि इसका प्रथम उल्लेख हुआ। इसका विस्तार बहुत ही सीमित रहा होगा। मौर्यकाल तक स्थिति ऐसी जान पड़ती है, परन्तु इसके बाद परिवर्तन हुआ और इनकी शक्ति बढ़ी।[14] इनके राज्य की सीमा बहावलपुर राज्य (वर्तमान में पश्चिमी पाकिस्तान) से लेकर बीकानेर राज्य के उत्तरी प्रदेश गंगानगर आदि, हिसार, जींद, करनाल, अम्बाला, रोहतक, गुरुग्राम, महेन्द्रगढ़, दिल्ली राज्य, उत्तरी दक्षिणीपूर्वी राजस्थान का अलवर, भरतपुर आदि सहारनपुर, मेरठ, अलीगढ़, मथुरा, आगरा, बरेली, बिजनौर, मुरादाबाद, आदि सारा पश्चिमी उत्तरप्रदेश यौधेय गणराज्य की सीमा के अन्तर्गत था।[15] इन उपर्युक्त सभी स्थानों से यौधेय की सभी मुद्राएं, मुद्रांक, शिलालेख, टकसाल आदि मिले हैं। यदि एकाध सिक्का मिलता तो यह मान लिया जाता कि व्यापार आदि के कारण मिला है, किन्तु सैंकड़ों की संख्या में प्राप्ति होने से यह सिद्ध होता है कि यौधेयों का राज्य वास्तव में इतना ही विशाल था। एक मुद्रा पूर्व मे नौरंगाबाद बामला से मिली है जिस पर 'प्रकृतानाकनगर' लिखा है। यह नौरंगाबाद बामला का प्राचीन नाम है।[16] संभवतः है यह कभी यौधेयों की राजधानी रही होगी।

नहला से प्राप्त यौधेय के मुद्रांक

नहला से प्रारंभिक ऐतिहासिक काल के मृदभांड और यौधेयो के सिक्के बनाने के सांचे प्राप्त हुए हैं। यहां से हमें 20 मुद्रांक प्राप्त हुए है जिनमें से 19 पर ब्रह्मी लिपि में यौधेयगणस्य जय लिखा हुआ है (**चित्र सं0 3**) व एक मुद्रांक पर यौधेयगणस्य जयद्धि लिखा हुआ हैं।

(चित्र सं0 3 नहला से प्राप्त यौधेय मुद्रांक)

विभिन्न स्थलों से यौधेयगण की निम्न मुद्राएं प्राप्त होती हैं:-

1. यौधेयानाम् बहुधान्यके
2. ब्हुधन यौधेय
3. राज्ञो रावणस्य्
4. राज्ञो वरूणमित्रस्य्
5. राज्ञो भानुवस्य्
6. भागवत् स्वामिनों ब्राह्मण्य् यौधेयस्य्
7. भागवत् स्वामिनों ब्राह्मण्य देवस्य् कुमारस्य्
8. यौधेयगणस्य् जय द्वि, त्रि
9. यौधेयानाम् जयमन्त्रधारणाम्

'यौधेयानाम् बहुधान्यके' लेख वाली मुद्राएं यौधेयों की प्रारम्भिककालीन मुद्रा है। ये मुद्राएं नौरंगाबाद, सुनेत, रोहतक, सीदीपुर, आवंली, करौंथा आदि स्थानों से मिली हैं। बहुधान्यक नाम यौधेय प्रदेश का अति प्राचीन नाम है। मुद्रा के मध्य यज्ञिक यूप बंधा हुआ है। नन्दी चलता हुआ प्रदर्शित है इसके दूसरे पक्ष में हाथी का चित्र हैं।[17]

यौधेयानाम् जयमन्त्रधारणाम् वाली मुद्रा नौरंगाबाद (बामला) से मिली है। इसी लेख वाला मुद्रांक सुनेत (लुधियाना) से प्राप्त हुआ था। पौद्येथो की यौधेयगणस्य जललेख वाली मुद्रा इनकी जयमुद्रा कहलाती हैं, इन मुद्राओं पर कार्तिकेय के बांई पैर के पास मयूर को चित्रित दिखाया गया है।[18] यौधेय लोग सदा से शिव भक्त रहे हैं। इसलिए शिव तथा उनके परिवार से सम्बन्धित नन्दी, मयूर, कार्तिकेय, भाला, आदि चिह्नों को अपनी मुद्राओं तथा मुद्रांकों में स्थान दिया है। षड़मुख कार्तिकेय प्रकार वाली मुद्राओं पर राज्ञोरावणस्य्, राज्ञोवरूणमित्रस्य और राज्ञोभानुवस्य लिखा है। ये रावण, वरूणमित्र, भानुव यौधेयों के राजा थे।[19]

सिक्के ही नहीं हरियाणा प्रदेश से यौधेयों के काफी मुद्रांक भी प्राप्त हुए हैं। सन् 1936 में बीरबल साहनी को खाखराकोट (रोहतक) की टकसाल से ऐसे ही मुद्रांक प्राप्त हुए थे। जिनसे यौधेय गणराज्य के सिक्के ढ़ाले जाते थे। साहनी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'दि टेकनीक ऑफ कास्टिंग क्रायंस' इन एंशियंट इंडिया' में यौधेयों की इस टकसाल का बड़ी गम्भीरता से अध्ययन करके कई चौंका देने वाली बाते कही हैं।[20] विद्वान लेखक एक स्थान पर कहता है कि ''सारे संसार में जो अब तक टकसालों में मुद्राओं के बनाने की प्राचीन सामग्री प्राप्त हुई है, उन सबमें रोहतक में प्राप्त सामग्री सबसे मूल्यवान और महत्तवपूर्ण है। इसमें सिक्के ढ़ालने के कई हजार मिट्टी के सांचे प्राप्त हुए हैं।'' भारत वर्ष में दो सहस्त्र वर्ष से पूर्व भी सिक्के ढालने की इतनी अच्छी शिल्पकला विद्यमान थी। ईसवीं, सन् से कई वर्ष पूर्व रोहतक में सिक्के ढ़ालने की इतनी अच्छी टकसाल थी हाल ही में भिवानी जिले में नौरंगाबाद में भी ऐसी ही टकसाल मिली है। यहां पर भी बहुत से सिक्के और सांचे प्राप्त हुए हैं जो कि यौधेय इतिहास पर काफी प्रकाश डालते हैं।

यौधेयगण की शासन प्रणाली

यौधेयों का राज्य एक गणतन्त्रीय प्रणाली पर आधारित था। यौधेयों के सिक्कों पर 'गण' शब्द की विद्यमानता से इस विषय में कोई शक नहीं रह जाता है। सम्भवतः प्रत्येक ग्राम के एक-एक और नगरों के कुछ अधिक प्रतिनिधियों के द्वारा यह संसद बनती थी। सब सांसद

मिलकर एक अधिनायक चुनते थे। जिसे महाराजा कहा जाता था।[21] लेकिन कुछ विद्वानों ने इस उल्लेख से यह निष्कर्ष निकाल लिया है कि यौधेयों के यहाँ धार्मिक शासन तन्त्र था, जिसकों ब्राह्मण लोग चलाते थे, परन्तु यह सब ब्रह्मणाय देव, जैसा कि काशी प्रसाद जायसवाल ने कहा है कि कार्तिकेय यौधेय राष्ट्र का आराध्य देव था और जिनकों उन्होंने अपना राष्ट्र समर्पित कर रखा था, प्रयुक्त हुआ है न कि किसी अन्य धर्म सभा या अन्य ब्राह्मणों की सभा के नायक के लिये। प्राचीन भारत के अन्य गणों ने भी इसी प्रकार अपने सिक्के अपने अराध्य देवों को समर्पित कर रखे थे। प्रकृतानाकनगर (नौरंगाबाद बामला) यौधेयों की राजधानी थी। यहीं से समस्त जनपद को प्रशासित किया जाता था। प्रशासन को ठीक तरह से चलाने के लिये कुछ अन्य प्रशासकीय विभाजन भी थे। ग्रामों और नगरों की व्यवस्था किस प्रकार चलाई जाती थी, इस विषय में कोई ऐतिहासिक तथ्य हमें प्राप्त नहीं है।

यौधेयगण अत्यन्त बलशाली था, उनकी वीरता, पराक्रम और शौर्य का सब लोग लोहा मानते थे। उनके यहाँ सेना का विशेष महत्तव था। पाणिनी के अनुसार यौधेय आयुधजीवी संघ था।[22]ऐसे वीरगण का पतन कैसे हुआ? इस विषय में हमें कोई ठोस तथ्य उपलब्ध नहीं है। आज की स्थिति में हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि चौथी सदी के तीन चार दशकों तक यौधेय लोग सत्ता में बने रहे, पर उसके बाद गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त (335 से 375 ईसवी) से परास्त होकर अपनी स्वतन्त्र सत्ता खो बैठे और उनके राज्य का विलय हो गया।

उपसंहार

यहां से प्राप्त मुद्रांको के आधार पर हम कह सकते है कि नहला पुरास्थल यौधेय गण का महत्वपूर्ण स्थल रहा होगा क्योंकि जहां पर राजनीतिक गतिविधियां होती थी वहीं पर उस काल में सिक्के बनते होगे इसलिए नहला पुरास्थल का इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह पुरास्थल खेतों में स्थित हैं जिसकी ऊंचाई 15 फीट थी। इस कारण खेत के स्वामी ने इस पुरास्थलकी मिट्टी को उठवा दिया तथा मिट्टी को हाईवे पर डलवा दिया जिस कारण यह पुरास्थल नष्ट हो गया। हरियाणा में बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण लगभग अस्सी प्रतिषत पुरास्थल नष्ट हो चुके है। क्योंकि बढ़ती जनसंख्या के कारण लोग खाली पड़ी जमीन को अनाज उगाने योग्य बना रहे हैं ।आम लोगों का पुरातत्व व पुरास्थलो के प्रति ज्ञान के अभाव व सरकार की अनदेखी की वजह से पुरास्थल बर्बाद हो रहें हैं।

संदर्भ-सूची

1 शास्त्री, योगानन्द. (2000). *प्राचीन भारत में यौधेय गणराज्य.* दिल्ली: भारतीय विद्या संस्थान, पृ.17

2 पाणिनि. (2009). *अष्टाध्यायी* (सूत्र 5.3.117 एवं 5.3.116). वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।

3 व्यास, महर्षि. (2011). *महाभारत* (आदिपर्व 35/76; सभापर्व अध्याय 32, श्लोक 1–72). दिल्ली: गीताप्रेस गोरखपुर।

4 अवस्थी, अवध बिहारी लाल. (1980). *यौधेयों का इतिहास.* लखनऊ: भारतीय इतिहास परिषद्।, पृ. 2

5 पाणिनी अष्टायायी: सूत्र 5-3-116

6 यादव, के. सी. (1991). *हरियाणा का इतिहास.* चंडीगढ़: हरियाणा साहित्य अकादमी, पृ. 99

7 सरस्वती, स्वामी ओमानन्द. (1985). *हरियाणा के प्राचीन मुद्रांक.* कुरुक्षेत्र: कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृ.57

8 के. सी. यादव, पूर्वाद्धृत,, पृ. 102

9 उपाध्याय, वासुदेव. (1976). *भारतीय सिक्के.* दिल्ली: राष्ट्रीय संग्रहालय प्रकाशन, पृ. 80

10 राम प्रकाश ओझा, प्राचीन सिक्के, पृ. 2

11 वही, पृ. 3

12 के. सी. यादव, पूर्वाद्धृत,, पृ. 102

13 महाभारत, सभापर्व, अध्याय-32, श्लोक 1 से 72

14 के. सी. यादव, पूर्वाद्धृत,, पृ. 101

15 स्वामी ओइमानन्द सरस्वती, पूर्वाद्धृत, पृ. 563

16 पूर्वाद्धृत, पृ. 56

17 आर्य, सुषमा. (1998). *हरियाणा के प्राचीन लक्षण स्थान.* रोहतक: महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृ. 76

18 स्वामी ओमानन्द, हरियाणा के प्राचीन लक्षण स्थान, पृ. 76

19 के. सी. यादव, पूर्वाद्धृत,, पृ. 100

20 स्वामी ओमानन्द, हरियाणा के प्राचीन मुद्रांक, पृ. 157

21 के. सी. यादव, पूर्वाद्धृत,, पृ. 103

22 पाणिनी अष्टाध्यायी: सूत्र 5-3-116